Gz – यीशु ने एक और मूक दानव को बाहर निकाला लूका ११:१६-३६ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु ने एक और मूक दानव को बाहर निकाला

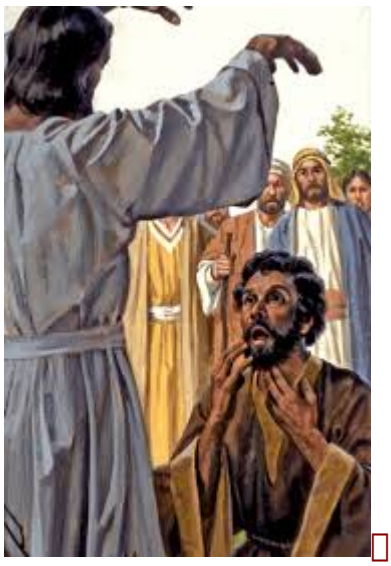
लूका ११:१६-३६

खुदाई: मसीहा के चमत्कार पर भीड़ की क्या प्रतिक्रिया है? वह इस दावे की मूर्खता कैसे दिखाता है कि वह बील्ज़ेबब द्वारा दुष्टात्माओं को बाहर निकालता है? दुष्टात्माओं को बाहर निकालने की येशुआ की क्षमता परमेश्वर के राज्य के बारे में क्या कहती है? पद २४-२६ में यीशु का अभिप्राय क्या है? आपको क्या लगता है मैरी ने क्या सोचा होगा जब उसे पता चला कि ईसा मसीह ने क्या कहा था? मसीहा अपनी माँ के बारे में क्या कह रहा था? उन्होंने मातृत्व और परिवार को कैसे पुनः परिभाषित किया? यीशु के अनुसार, एक महिला की सच्ची और सर्वोच्च पुकार क्या है? क्यों? येशुआ इस विशेष पीढ़ी की निंदा क्यों करता है? योना का चिन्ह क्या है? दक्षिण की रानी कौन है? कौन किसकी निंदा करता है? पद ३४ की सादृश्यता में उनका क्या कहना है? आंखें और शरीर क्या दर्शाते हैं? इस आध्यात्मिक सत्य को कैसे समझा जाता है?

चिंतन: यदि आपको अभी अपने जीवन की तुलना एक किले से करनी हो, तो यह कैसा है: जिब्राल्टर की चट्टान, जो धीरे-धीरे नष्ट हो रही है, या टूट रही है? क्या आप आध्यात्मिक रूप से आक्रमण पर हैं या घेरे में हैं? लड़ाई कैसी चल रही है? मसीह ने अपनी माँ के बारे में जो कहा उसका आप पर क्या प्रभाव पड़ता है? क्या यीशु द्वारा महिलाओं के लिए दिया गया सबसे बड़ा आशीर्वाद, एकल या विवाहित, अभी भी पूरी तरह से पहुंच के भीतर है? क्यों या क्यों नहीं? आपकी पीढ़ी को ईश्वर की ओर मुड़ने के लिए क्या संकेत चाहिए? लोगों की प्रेरणाओं को बदलने के लिए “संकेतों” पर भरोसा करने में क्या समस्या है? आपकी आध्यात्मिक दृष्टि का स्कोर कैसा होगा: २०/२०? २०/८०? वर्णान्ध? क्यों?

यीशु को दुष्टात्माओं के कब्ज़े के आधार पर पहले ही अस्वीकार कर दिया गया था (देखें Ek – दुष्टात्माओं के राजकुमार बील्ज़ेबब द्वारा ही यह साथी दुष्टात्माओं को बाहर निकालता है), लेकिन वह गलील में था, यह यहूदिया में है। यहां येशुआ ने एक और मूक दानव को बाहर निकाला, जो निश्चित रूप से तीन मसीहाई चमत्कारों में से एक था (यशायाह Gl– तीन मसीहाई चमत्कार पर मेरी टिप्पणी देखें)। फरीसी, जो इस समय तक लगातार उसका पीछा करते थे, जानते थे कि उसके कार्य को कैसे विरोध करना है। भीड़ से पहले पूछा गया: क्या यह दाऊद का पुत्र हो सकता है (मती १२:२३)। लेकिन अब उनके पीछे आने वाली जनता ने गैलीलियन रब्बी का परीक्षण किया, और एक संकेत मांगा।

Gz – यीशु ने एक और मूक दानव को बाहर निकाला लूका ११:१६-३६ | 2



आरोप: यीशु एक ऐसे दुष्टात्मा को निकाल रहा था जो मूक था।
पिछले खाते से परिवर्तन अचानक हुआ है। क्रिया का अपूर्ण काल, निरंतर क्रिया का संकेत देते हुए, हमें तुरंत वर्तमान कहानी में डाल देता है। जब दुष्टात्मा चली गई, तो वह मनुष्य जो गूँगा था बोला, और भीड़ चकित हो गई। लेकिन उनमें से कुछ ने, फरीसियों ने पहले जो कहा था (मती १२:२४), उसे दोहराते हुए, उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा, “बील्ज़ेबूब (हिब्रू: बाल-ज़िबुल), दुष्टात्माओं के राजकुमार के माध्यम से, वह दुष्टात्माओं को निकाल रहा है” (लूका) ११:१४-१५)।

मसीहा पर एक ही समय में दो तरफ से हमला किया गया। एक ओर से उन पर निर्लज्ज तिरस्कार के साथ हमला किया गया और कहा गया कि उनके चमत्कारों का श्रेय धोखेबाज, दुष्टात्माओं के राजकुमार को दिया जाता है। हालाँकि, अन्य लोगों ने, धर्मपरायणता के बहाने, स्वर्ग से संकेत माँगकर उसकी परीक्षा ली (लूका ११:१६)। हालाँकि, अविश्वास के लिए कभी भी पर्याप्त सबूत नहीं होते हैं। वे फ़रीसी स्पष्टीकरण को स्वीकार करने लगे थे और सैनहेड्रिन के सदस्यों की नकल करने लगे थे (Lg – महान महासभा देखें)।

बचाव: धार्मिकता के पुत्र ने तीन सबूतों के साथ झूठे आरोप का खंडन किया। पहला कारण यह था कि यदि उसने शैतान से अपनी शक्ति प्राप्त की और उस शक्ति का उपयोग शैतान के विरुद्ध किया, तो शैतान स्वयं के विरुद्ध कार्य कर रहा होगा, और यह अकल्पनीय होगा। यीशु ने उनके मन की बातें जान लीं, और उन से कहा, जिस राज्य में फूट होगी, वह नाश हो जाएगा, और जिस घर में फूट होगी, वह गिर जाएगा। यदि शैतान आपस में बंटा हुआ है, तो उसका राज्य कैसे कायम रह सकता है? मैं ऐसा इसलिए कहता हूं क्योंकि आप दावा करते हैं कि मैं बील्ज़ेबब द्वारा दुष्टात्माओं को निकालता हूं (लूका ११:१७-१८)। लेकिन यहूदी धार्मिक नेता और बड़ी संख्या में अन्य लोग इस युग के ईश्वर के प्रति अंधे हो गए थे (दूसरा कुरिन्थियों ४:४)। यह ऐसा था मानो वे कह रहे हों, “मेरा मन पहले ही बन चुका है। . . मुझे तथ्यों से भ्रमित मत करो।”

Gz – यीशु ने एक और मूक दानव को बाहर निकाला लूका ११:१६-३६ | 3

दूसरे, येशुआ ने उन लोगों के दोहरे मानदंड की ओर इशारा किया जो उस पर आरोप लगा रहे थे। उन्होंने स्वयं माना कि भूत-प्रेत भगाने का वरदान ईश्वर की ओर से था। और यदि उनके अनुयायियों ने दुष्टात्माओं को बाहर निकाला, तो उन्होंने दावा किया कि यह एडोनाई की शक्ति से किया गया था। इसलिए, वे अपने स्वयं के धर्मशास्त्र में असंगत थे। चूँकि मसीह ने दुष्टात्माओं को बाहर निकाला, यह भी परमेश्वर की उंगली से, यानी उसकी शक्ति से होना चाहिए। अब यदि मैं दुष्टात्माओं को बाल्जबूब वा शैतान की सहायता से निकालता हूं, तो तुम्हारे अनुयायी उन्हें किस की सहायता से निकालते हैं? तो फिर, वे आपके न्यायाधीश होंगे। परन्तु यदि मैं परमेश्वर की उंगली से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ गया है (लूका ११:१९-२०)। यह चमत्कार उनके संदेश को प्रमाणित करेगा।

तीसरा, यदि मसीहा शैतान के घर में प्रवेश कर सकता है, तो यह स्पष्ट है कि उसके पास उस दुष्ट से अधिक शक्ति है, जिसने उसका विरोध करने की कोशिश की होगी। जब एक ताकतवर आदमी (शैतान), पूरी तरह से हथियारों से लैस होकर, अपने घर की रक्षा करता है, तो उसकी संपत्ति सुरक्षित रहती है। परन्तु जब कोई बलवन्त (मसीह) उस पर आक्रमण करता है और उसे वश में कर लेता है, तो वह उस कवच को छीन लेता है जिस पर बलवान को भरोसा था और उसकी लूट को बाँट देता है। इससे पता चलता है कि वह शैतान से अधिक शक्तिशाली है, उसके अधीन नहीं। तब मसीह ने लोगों को निर्णय लेने के लिए बुलाया और कहा: जो कोई मेरे साथ नहीं है वह मेरे विरुद्ध है, और जो मेरे साथ नहीं बटोरता वह बिखेरता है (लूका ११:२१-२३)। ईसा मसीह और महान ड्रैगन के बीच युद्ध में तटस्थ रहना असंभव था। जो लोग देख रहे थे उन्हें अपना निर्णय लेना पड़ा। अब यह स्पष्ट हो गया था कि उसके दुश्मन किस तरफ थे। उन्होंने यीशु पर दुष्टात्माओं के राजकुमार के साथ मिलीभगत का आरोप लगाकर शुरुआत की, लेकिन खुद को शैतान के सहयोगियों के रूप में लोगों के सामने प्रकट होने पर समाप्त कर दिया।

राष्ट्र की स्थिति: यहाँ मसीहा ने राष्ट्र की तुलना एक ऐसे व्यक्ति से की है जिसके पास एक बार दुष्ट आत्मा थी। जब कोई अशुद्ध आत्मा किसी मनुष्य में से निकलती है, तो वह विश्राम की खोज में शुष्क स्थानों में फिरती है, परन्तु उसे नहीं मिलती। फिर यह कहता है, “मैं उस घर में लौट आऊंगा जिसे मैंने छोड़ा था।” जब वह आता है, तो वह घर को साफ-सुथरा और व्यवस्थित पाता है। तब वह जाता है और अपने से भी अधिक दुष्ट सात आत्माओं को ले आता है, और वे भीतर जाकर वास करते हैं। और उस मनुष्य की अन्तिम दशा पहिले से भी बुरी होती है (लूका ११:२४-२६)।

इस कहानी के द्वारा प्रभु ने राष्ट्र के बारे में अपना अनुमान प्रकट किया। इज़राइल अशुद्ध था और जॉन बैपटिस्ट ने लोगों को पश्चाताप करने के लिए बुलाते हुए एक मंत्रालय चलाया था (देखें Be – युहन्ना बप्तिस्मा देनेवाला रास्ता तैयार करता है)। बहुत से लोगों ने अपने पाप को स्वीकार करते हुए, विसर्जन मंत्रालय को जवाब दिया था। इन लोगों ने बपतिस्मा द्वारा योचानन के साथ अपनी पहचान बनाई, इस समझ के साथ कि जब मेशियाच, जिसकी वे आशा कर रहे थे, आएगा तो उन्हें पाप की क्षमा का

Gz – यीशु ने एक और मूक दानव को बाहर निकाला लूका ११:१६-३६ | 4

अनुभव होगा। अत: राष्ट्र शुद्ध हो गया। लेकिन इस अंतराल में, राष्ट्र जॉन के पश्चाताप के संदेश से मुड़ गया था और अब मसीह को अस्वीकार करने की प्रक्रिया में था। इसका मतलब यह था कि जॉन ने राष्ट्र में जो अच्छा किया था उसे फेंक दिया जा रहा था। और यीशु की इस प्रगतिशील अस्वीकृति के साथ-साथ आध्यात्मिक पतन और प्रतिगमन भी हुआ। इसलिए जब राष्ट्र ने सत्य को अस्वीकार करने के अपने निर्णय को अंतिम रूप दिया, तो राष्ट्र की आध्यात्मिक स्थिति हेराल्ड द्वारा अपना मंत्रालय शुरू करने से पहले की तुलना में बदतर होगी। यह राष्ट्र पर गंभीर आरोप था।

जब येशुआ ये बातें कह रहा था, भीड़ में से एक महिला, उसकी शिक्षाओं से गहराई से प्रभावित होकर, उसकी माँ की प्रशंसा करके सार्वजनिक रूप से उसका सम्मान करना चाहती थी। उसने पुकारकर कहा, “धन्य है वह माता जिसने तुझे जन्म दिया और तेरा पालन-पोषण किया” (लूका ११:२७)। यीशु की माँ को इस तरह की सार्वजनिक श्रद्धांजलि निश्चित रूप से उचित थी, क्योंकि ऐसे बुद्धिमान और धर्मनिष्ठ पुत्र को जन्म देना एक माँ की सर्वोच्च महिमा थी। इस तरह की टिप्पणी से कोई भी मां खुशी से झूम उठेगी। ऐसी संस्कृति में जहां एक महिला को उसके पैदा होने वाले बेटों की संख्या से मापा जाता है, और विशेष रूप से पिता और मां का सम्मान करने के बारे में मसीहा की अडिग शिक्षा के प्रकाश में, आप नाज़रीन से उम्मीद करेंगे कि वह हार्दिक गर्जना करे, “आमीन!” इसके बजाय, उन्होंने असहमत होने का साहस किया।

उसने उत्तर दिया: बल्कि वे धन्य हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उसका पालन करते हैं (लूका ११:२८)। धार्मिकता के पुत्र ने महिलाओं के लिए दो पवित्र संस्थाओं – मातृत्व और परिवार – पर ध्यान केंद्रित किया और उन दोनों को फिर से परिभाषित किया। जिबंत बाक्य के अनुसार, एक महिला का जीवन वास्तव में तब धन्य नहीं होता जब वह माँ बनती है, बल्कि तब जब वह परमेश्वर के वचन को सुनती है और उसका पालन करती है। पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए सर्वोच्च गौरव यीशु मसीह का शिष्य होना है। यही हमारी असली पहचान और सौभाग्य का एकमात्र मार्ग है। अपनी पहचान को किसी और चीज़ पर आधारित करना, महिलाओं के लिए बच्चे और परिवार या पुरुषों के लिए करियर, रेत पर अपना घर बनाना है। लेकिन मेशियाच के शिष्यों के रूप में हमारी बुलाहट को कोई भी कभी भी छीन नहीं सकता है।

मैरी का जीवन परिपूर्ण नहीं था। गेब्रियल के संदेश ने चित्र-परिपूर्ण जीवन के लिए उसकी आशाओं को अचानक समाप्त कर दिया जब वह जीवन में बस शुरुआत ही कर रही थी। इसी क्रम में कहीं जोसेफ की मृत्यु हो गई। पति का वियोग कुछ महिलाओं को ख़त्म कर देता है। उसकी बाइबिल की कहानी के अंत में क्रॉस क्षितिज पर मंडराने लगा। मरियम एक माँ के लिए सबसे बुरी शर्मिंदगी की कगार पर खड़ी थी। जब उसके बेटे को एक सामान्य अपराधी के रूप में क्रूस पर चढ़ाया गया, तो कोई भी नहीं चिल्लाया, “धन्य है वह माँ जिसने तुम्हें जन्म दिया और तुम्हारा पालन-पोषण किया।” यदि मैरी की पहचान और जीवन का अर्थ मातृत्व और परिवार पर निर्भर होता, तो इसने उसे नष्ट कर दिया होता। लेकिन यीशु अपनी माँ को भी बचाने आये। और इसलिए उसने उसे अपनी धन्य

Gz – यीशु ने एक और मूक दानव को बाहर निकाला लूका ११:१६-३६ | 5

माँ के रूप में उसकी पहचान से मुक्त करने के लिए काफी परेशान किया और उसे एक ऐसी टिकाऊ पहचान दी जो क्रूस के अंत तक जीवित रह सके।

मसीहा ने मातृत्व से कुछ भी छीने बिना वह सब किया। उन्होंने ज़ोर देकर अपनी माँ का सम्मान करने का महत्व सिखाया। लेकिन उन्होंने कभी भी महिलाओं – अपनी माँ या किसी अन्य महिला – को माँ की भूमिका तक सीमित नहीं रखा। तनख और नई वाचा दोनों महिलाओं को इतने व्यापक रूप में परिभाषित करते हैं कि हर महिला के जीवन को शुरू से अंत तक शामिल किया जा सके। जब महिलाएं परमेश्वर का वचन सुनती हैं और उसका पालन करती हैं तो उन्हें जीवन में सर्वोच्च बुलाहट और गहरा अर्थ मिलता है। मरियम के शुरुआती दिनों से लेकर उसके जीवन के अंत तक, उसे येशुआ की शिष्या बनने के लिए बुलाया गया था। कोई भी चीज़ उसे उससे दूर नहीं ले जा सकती।

“मैरी, ईश्वर की माता” का सिद्धांत, जैसा कि हम आज जानते हैं, सदियों के विकास का परिणाम है, जो अक्सर रोमन कार्डिनल्स की घोषणाओं से प्रेरित होता है। और फिर भी मैरीओलैट्री की पूर्ण प्रणाली रोमन कैथोलिक हठधर्मिता में तुलनात्मक रूप से हालिया विकास है। चौथी शताब्दी के अंत तक मैरी के प्रति किसी विशेष सम्मान का कोई संकेत नहीं मिला है। वाक्यांश “प्रभु की माँ” की उत्पत्ति ४३१ में इफिसस की परिषद में हुई थी, और १९६५ तक पोप पॉल VI द्वारा इसे “चर्च की माँ” घोषित नहीं किया गया था। आज वह सभी धार्मिक स्नेह की वस्तु है, और वह स्रोत है जहां मोक्ष के सभी आशीर्वाद मांगे और अपेक्षित हैं।

बाइबल मरियम को यीशु की माँ कहती है (यूहन्ना २:१), लेकिन उसे कोई अन्य उपाधि नहीं देती है। मैरी की पूजा के लिए रोमन चर्च को जो कुछ भी प्रमाणित करना है, वह पूरी तरह से बाइबिल के बाहर की परंपराओं का एक समूह है, जो कुछ भिक्षुओं, ननों और संतों के रूप में सम्मानित अन्य लोगों के सामने उनकी उपस्थिति के बारे में बताता है। पहली नज़र में “प्रभु की माँ” शब्द तुलनात्मक रूप से हानिरहित लग सकता है। लेकिन वास्तविक परिणाम यह है कि इसके उपयोग के माध्यम से रोमन कैथोलिक मैरी को ईसा मसीह से अधिक मजबूत, अधिक परिपक्व और अधिक शक्तिशाली मानने लगे हैं। उनके लिए वह उसके अस्तित्व का स्रोत बन जाती है और उस पर छा जाती है। तो वे उसके पास जाते हैं
– उसके पास नहीं। रोम कहता है, ”वह मरियम के माध्यम से हमारे पास आया, और हमें उसके माध्यम से उसके पास जाना चाहिए।” रोमनवाद व्यक्ति को पवित्र आत्मा के रूप में बड़ा करता है, और उस व्यक्ति को छोटा कर देता है जिसे पवित्र आत्मा बड़ा करना चाहता है।

राष्ट्र के लिए संकेत: जब भीड़ बढ़ती गई, तो यीशु ने उनसे कहा: यह एक दुष्ट पीढ़ी है। जोर उस खास पीढ़ी पर था। आम लोग फ़रीसी व्याख्या को स्वीकार करने लगे हैं। वह चिन्ह माँगता है, परन्तु योना के चिन्ह को छोड़ और कोई न दिया जाएगा। क्योंकि जैसा योना नीनवे के लोगों के लिये एक चिन्ह था, वैसा ही मनुष्य का पुत्र भी इस पीढ़ी के लिये एक चिन्ह होगा (लूका ११:२९-३०)। इस्राएल को योना के चिन्ह के अलावा

Gz – यीशु ने एक और मूक दानव को बाहर निकाला लूका ११:१६-३६ | 6

और कोई चिन्ह नहीं मिलना था, जो कि पुनरुत्थान का चिन्ह था (मेरी टिप्पणी देखें योना एएस – योना का चिन्ह)। यह चिन्ह इस्राएल में तीन अलग-अलग बार आना था।

योना का पहला संकेत लाजर का पुनरुत्थान था (आईए), जिसे तब अस्वीकार कर दिया गया था जब महासभा ने यीशु (आईबी) को मारने की साजिश रची थी।

योना का दूसरा संकेत मसीह का पुनरुत्थान था (एम्सी), जिसे तब अस्वीकार कर दिया गया था जब महासभा ने सुसमाचार की सच्चाई को अस्वीकार कर दिया था और प्रेरितों के काम ७:१-६० में स्टीफन को पत्थर मार दिया था।

योना का तीसरा संकेत दो गवाहों का पुनरुत्थान होगा (प्रकाशितबाक्य Dm पर मेरी टिप्पणी देखें – दो गवाहों का पुनरुत्थान), जिसे स्वीकार किया जाएगा और सभी इज़राइल को बचाया जाएगा (प्रकाशितबाक्य Ev पर मेरी टिप्पणी देखें – यीशु मसीह के दूसरे आगमन का आधार)।

दक्षिण की रानी (प्रथम राजा १०:१-१५), इस पीढ़ी के लोगों के साथ न्याय के समय उठेंगी और उनकी निंदा करेंगी (देखें Ep – दक्षिण की रानी इस पीढ़ी के साथ न्याय के समय उठेंगी और इसकी निंदा करेंगी) , क्योंकि वह सुलैमान की बुद्धि सुनने और उस से लाभ उठाने के लिये पृय्वी की छोर से आई थी। अब इस पीढ़ी ने सुलैमान से भी महान व्यक्ति का ज्ञान सुना था, परन्तु उसके वचन से विमुख हो गई। इस कारण न्याय के समय नीनवे के लोग इस पीढ़ी के साथ खड़े होकर उसे दोषी ठहराएंगे, क्योंकि उन्होंने योना का उपदेश सुनकर मन फिराया; और अब योना से भी बड़ी कोई चीज़ यहाँ है (लूका ११:३१-३२)। योना से भी बड़ा उपदेशक और सुलैमान से भी अधिक बुद्धिमान ऋषि यहाँ था, जिससे उसे अस्वीकार करने के लिए उनकी निंदा और भी अधिक हो गई।

राष्ट्र के नाम एक आह्वान: यीशु ने अपना प्रवचन समाप्त किया और प्रकाश और अंधेरे रूपांकनों का उपयोग किया। उसे स्वीकार करना प्रकाश में चलना था; उसे अस्वीकार करना अंधकार में चलना था। मसीह ने अपने वचन की तुलना प्रकाश से की। येशुआ जो प्रकाश लाया वह पिता का ज्ञान था। उन्होंने अपने बारे में और पिता के बारे में जो खुलासा किया वह गुप्त रूप से प्रकट नहीं किया गया था। कोई भी दीपक जलाकर ऐसे स्थान पर नहीं रखता जहाँ वह छिपा हो, या किसी कटोरे के नीचे। इसके बजाय उन्होंने उसे उसके स्टैंड पर रख दिया, ताकि जो अंदर आएं वे रोशनी देख सकें। मसीहा ने पिता को प्रकट करने के लिए जो सिखाया और किया वह राष्ट्र के सामने किया गया। परन्तु राष्ट्र आध्यात्मिक रूप से अंधा था और उसने प्रकाश को अस्वीकार कर दिया था (लूका ११:३३)।

अस्वीकार की वजह प्रकाश नहीं, बल्कि देखने वाले की नजर थी। तुम्हारी आँख तुम्हारे शरीर का दीपक है। जब आपकी आंखें स्वस्थ होती हैं, तो यहां ग्रीक का अर्थ उदार है, आपका पूरा शरीर भी रोशनी से भरा है। लेकिन जब वे अस्वस्थ होते हैं,

Gz – यीशु ने एक और मूक दानव को बाहर निकाला लूका ११:१६-३६ | 7

तो यहां ग्रीक का अर्थ है कंजूस, आपका शरीर भी अंधेरे से भरा हुआ है। तो फिर, यह देखो कि तुम्हारे भीतर का प्रकाश अंधकार नहीं है। इसलिए, यदि आपका पूरा शरीर प्रकाश से भरा है, और इसका कोई भी हिस्सा अंधेरा नहीं है, तो यह उतना ही प्रकाश से भरा होगा जितना कि दीपक आप पर अपनी रोशनी डालता है (लूका ११:३४-३६)। इसराइल के अंधकार में रहने का कारण प्रकटकर्ता की गलती नहीं थी, बल्कि उस राष्ट्र की गलती थी जिसने प्रकाश से इनकार कर दिया था। यीशु ने वादा किया कि यदि वे प्रकाशितबाक्य प्राप्त करेंगे, तो उन्हें प्रकाश मिलेगा। उसने उन्हें प्रकाश के रूप में अपने पास आमंत्रित किया।